Mind and Society, ISSN 2277-6907
Vol.08, No. I & II, March & June 2019, Page No. 54 to 59

बैगा आदिवासियों का सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन

(अमरकंटक के विशेष सन्दर्भ में)

* निर्मला तिवारी
** रीता पाण्डेय
***आभा रूपेंद्र पाल

Received	Reviewed	Accepted
15 June 2019	18 June 2019	21 June 2019

मानव समाज एक प्रगतिशील समाज है, जिसके सामाजिक – सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन का निरंतर उद्विकास होते आया है। विकास की यह निरंतरता, समाज के हर वर्ग में आयी, परन्तु उसकी गति में भिन्नता समाहित रही। बैगा आदिवासी के सन्दर्भ में यदि कहा जाये तो उनका पूरा जीवन प्रकृति पर निर्भर है, और उसी के अनुरूप, इनकी परम्परायें ,विश्वास व अर्थव्यवस्था भी बदलती रही है। ये बदलाव अमरकंटक अंचल में भी देखा गया। एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले बैगा धीरे धीरे सभ्य समाज के सम्पर्क में आने लगे और अपनी विधा से सभ्य समाज को परिचत कराया । जब समाज और संस्कृति पर इतिहास लेखन हो ,और वह भी आम जन, जनजाति अथवा ग्राम्य जीवन, पर हो तब मौखिक स्रोत्तों की अनिवार्यता और बढ़ जाती है यद्यपि अमरकंटक अंचल विशेष पर द्वितीयक स्रोतों के रूप में लेखो का अध्ययन किया गया लेकिन प्रत्यक्ष अवलोकनों और अनौपचारिक साक्षात्कार द्वारा भी इनके विषय में जानकारी इकट्ठी की गयी हैं। अध्यनों परान्त पाया गया कि बैगा समाज वे आज भी सभ्यता को उस रूप में स्वीकार नहीं किया कि उनका पलायन अपनी संस्कृति व समाज से हो जाये। वह अपनी निष्ठा ,ईमानदारी व स्वंच्छंदता को एक परम्परागत धरोहर के स्वरूप में संजोये हुए है।

सभ्य समाज से दूर, आज भी ऐसे समुदाय है जो सभ्यता के प्रभावों से खुद को दूर रखकर ,बिना किसी भौतिकवादी आडम्बरों के जंगल और पहाड़ों में अपना जीवन बसर करते है। उनका जीवन प्राचीन परम्पराओं से घिरा हुआ है। उनकी परम्परायें ,विश्वास व आस्था अन्य समाज से भिन्न है।[1] बैगा, ऐसे ही समाज का प्रतिनिधित्व करते है जो, उस आदिम गंध से महकते वनफूलों की तरह है, जो अपनी अनोखी जीवनशैली को जीता हुआ ,आधुनिकता से दूर बसता है।[2] सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक बैगा म .प्र. के दक्षिण पश्चिम में निवास करते है। ये मैकल पर्वत श्रेणियों की गहन कंदराओं ,घाटियों व नर्मदा नदी के किनारे –किनारे ही निवास करते है, इसीलिए डिंडोरी जिला और बिलासपुर जिले के बीच का भाग ''बैगाचक ''कहलाता है। बैगा अपनी पुरानीं परम्पराओं को प्रतिबिंबित करते है। इनकी उत्पत्ति के बारे में तो कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता है , और न ही लिखित इतिहास मिलता है। अर्थात् केवल इनके पूर्वजों द्वारा कही गयी पौराणिक गाथाओं से ही मालूम होता है की, इनकी उत्पत्ति कैसे हुई । बैगा खुद को जंगल का राजा तथा सृष्टि का निर्माता बताते है। रसेल और हीरालाल के अनुसार ,''सर्वप्रथम भगवान ने नागा बैगा और नागा बैगनी को ,वे जंगल में रहते थे। कुछ समय बाद उनके दो पुत्र हुए ,उन्होंने अपनी –अपनी बहनों से विवाह कर ली, जिससे मनुष्य जाति की उत्पत्ति, इन दोनों युगलो से हुई। पहले युगल से बैगा व दूसरे युगल से गोड़ की उत्पत्ति हुई।''[3] बैगा आदिवासियों की जीवनशैली पर जंगल का प्रभाव रहा है।

* *शोधार्थी, इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)*
* **विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग ,शा.महा. व. स्ना. महाविद्यालय, महासमुंद (छ.ग.)*
***विभागाध्यक्ष, इतिहास अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)*

ये आरम्भ से ही अपनी जीविका के साधन, यहाँ से प्राप्त करते रहे हैं । इनकी आर्थिक व्यवस्था ही इनकी धार्मिक व सामाजिक जीवन व्यवस्था का विस्तार रही है। यह समुदाय प्राकृतिक शक्तियों पर ही अवलम्बित रहा है, जिनको अनुकूल बनाने के लिए अनेक व्यक्तिक व सामूहिक पूजा –अर्चना आदि के रूप में करता है। यही कारण है की ,ये प्रकृति को देवता के रूप में पूजते है और अनेक प्रकार की जड़ी बूटियों को औषधि के रूप में तथा अपना भरण पोषण करने के लिए निर्भर रहते है।

बैगा आदिवासी का जीवन पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर है ,और मानव जीवन के प्रारम्भ से ,व्यक्ति जिससे डरता रहा, जिस पर निर्भर रहा, उसी की पूजा करता रहा ,इसीलिए ये बैगा आदिवासी आज भी प्रकृति की पूजा कर रहे है।

परिवार, विवाह और नातेदारी :

बैगा आदिवासी, एक अर्द्धखानाबदोश जैसा जीवन जीते है ,जोकि इनकी कृषि व्यवस्था से ज्ञात होता है। ये कभी जमीन को जोतते नहीं है , क्योंकि यह उनकी माँ हैं ,और माँ के शरीर को खरोंच नहीं लगा सकते हैं । ये एक स्थान से उत्पादन लेने के बाद दुबारा वही से पैदावार नहीं लेते है, ताकि उनकी माँ रूपी यह भूमि कमजोर न हो जाये । अतः इनकी स्थानांतरित कृषि ही बेवर या दहिया कृषि कहलाती हैं । वे खुद को जंगल के उत्पादन पर ही निर्भर रखते हैं ,क्योंकि वे दूसरों के यहाँ काम करना पसंद भी नहीं करते हैं ।[4] इनके इसी घुमन्तु व्यवहार की वजह से बैगा आदिवासियों की पारिवारिक संरचना में भी भिन्नता दिखाई देती है । इनके यहाँ एकांकी और संयुक्त दोनों परिवार के प्रमाण मिलते है। सामाजिक संगठन की संरचना कुछ विशेष प्रकार के समूहों के बीच अन्तर्सम्बन्धों से होती हैं। ये वे समूह होते हैं ,जिनसे सामाजिक जीवन संभव हो पाता हैं। परिवार, सामाजिक –संगठन का एक आधारभूत घटक हैं । सामान्यतौर पर माता –पिता और बच्चों के समूह को परिवार कहते हैं। परिवार से तात्पर्य पितृवंशीय ,मातृवंशीय या ऐसे सजातीय सदस्यों से हैं, जिनके साथ भावनात्मक घनिष्ठता का वातावरण, सदस्यों को प्रदान करता हैं।[5] परिवार ,धार्मिक और निश्चिंत तौर पर आर्थिक सहयोग प्रदान करता हैं ,परन्तु सर्वप्रमुख परिवार सांस्कृतिक विरासत के हस्तांतरण का प्रमुख स्रोत हैं। अमरकंटक के बैगा जनजातियों में भी सामाजिक संगठन की सुदृढ़ रचना पाई जाती हैं । इनका परिवार बैगाओं के सामाजिक –संगठन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण इकाई हैं।

प्राचीन काल में बैगा परिवार की व्यवस्था के अंतर्गत रसेल व हीरालाल ने, इन बैगा समाज में बहुविवाही परिवार का उल्लेख किया हैं ,यानि बैगा समाज में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन था। वही उत्प्रेती के अनुसार बैगा परिवार में पितृसत्तात्मक ,एक विवाही व बहुविवाही परिवारों का उल्लेख किया हैं। एल्विन के अनुसार ,''घर में प्रत्येक वस्तु ,भवन से लेकर सबसे सस्ता पकाने का पात्र तक ,पति या परिवार के पिता की संपत्ति हैं।''[6]

विवाहोपरांत यदि पुत्र पृथक रहने की इच्छा करता है तो पिता उसे स्वीकृति प्रदान कर सकता है, साथ ही कुछ पात्र, कुल्हाड़ी व कुछ कपड़े भी दे सकता हैं। बैगा में संयुक्त परिवार की परम्परा हिन्दू संयुक्त परिवार के मिताक्षरा नियम से भिन्न है।[7] बैगा नियम में संपत्ति अविभाजित संपत्ति का संयुक्त उत्तराधिकार नहीं पाया जाता हैं, इसके लिए निश्चित रूप से एक व्यक्ति ,परिवार के मुखिया को प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाता हैं । यह उसके विवेक पर निर्भर होता है कि वह अपने जीवन में इसे कैसे बांटता हैं।

आधुनिक बैगा परिवार सामाजिक –सहकारिता का जीवंत उदाहरण बना हुआ हैं। बैगा परिवार सामाजिक –संगठन का सर्वाधिक आधारभूत घटक है।बैगाओं में पहले बहुपत्नी प्रथा पायी गयी ।इसका कारण बैगा समाज में महिलाओं कि संख्या पुरुषों की तुलना में काफी अधिक थी। एल्विन के अनुसार –1931 में भारत के सन्दर्भ में, बैगाओं में लिंगानुपात 1000 पुरुषों में 1355 महिलायें थी।[8] परन्तु 2011 की जनगणना में इनकी संख्या 997 रह गयी है, तो बहुपत्नी प्रथा भी कम हो गया। बहु पत्नी प्रथा का कम होना, इनके समाज में संयुक्त परिवार के घटते हुए क्रम को दर्शाता है। इन्होंने अपने परम्परागत आर्थिक व्यवस्था को छोड़कर नए परिवेश की ओर गमन किया। वनों पर इनकी निर्भरता कम हुई ,बेवर कृषि पद्धति का त्याग (जो शासन द्वारा भी प्रतिबंधित है),साथ ही जीवन यापन के अन्य साधन जैसे मजदूरी करना ,वन –औषधि बेचना ,कुछ शिक्षित बैगा का सरकारी नौकरी इत्यादि कर जीवन यापन करना भी इनका एकांकी परिवार को स्वीकार करने का कारण बना। यद्यपि अमरकंटक,जो वनसम्पदा से सम्पन्न है ,औषधियुक्त जड़ी–बूटियों का प्रयोग अपने स्वास्थ्य व जीविका चलाने के लिए सर्वाधिक उपयोग इन आदिवासियों द्वारा किया जा रहा है। साथ ही इनकी पारिवारिक व्यवस्था भी परम्परागत स्वरूप लिए हुए है ,जो सूक्ष्म रूप में बाहरी परिवेश धारण किये हुए है ।

अमरकंटक नगर पंचायत की जनगणना 2011 से

वर्ष	सामान्य	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	बच्चे
2001	802 / 1000	728 / 1000	917 / 1000	1080
2011	770 / 1000	747 / 1000	1011 / 1000	931
परिवर्तन	−31	19	94	−149

बैगा पुरुष व महिला में शादी से पूर्व सामान्य सामाजिक सम्बन्ध रखते हैं । युवावस्था बाद ही सगाई होती हैं ,और सगाई की प्रकिया पुरुषों द्वारा शुरू होती हैं। बैगा पुरुष ,वांछित पत्नी के माता –पिता को वधू–मूल्य देकर सहमत करता हैं। मुख्य रूप से दोसी (दो बुजुर्ग पुरुष ,जो दूल्हा और दुल्हन से सम्बंधित होते हैं) और सुआसिन (युवा अविवाहित बहनें या दूल्हा–दुल्हन के सम्बन्धी) होते हैं ,जो समारोह आयोजित करते हैं । समारोह कुछ दिनों में ही भरने लगता हैं ,और भोज ,शुभ –अशुभ चिन्हों के साथ,अभिषेक ,जोड़ों (युगल) को नहाने ,कई संस्कारों को करने ,दुकानों को सजाने ,दोनों जोड़ों को एक कपड़े की गाँठो से बांधना ,और उपहार प्रदान करना (दुल्हन के दाई ,माँ ,भाई ,दोसी और सुआसिन को दूल्हे के पिता द्वारा)। नव –युगल पहली रात्रि जंगल में बिताता हैं ,जिसे 'बेनी चेदना' समारोह कहते हैं। ये समारोह जीवन में केवल एक बार ही किया जा सकता हैं। अन्य समारोह भी होते है पर वे कम सामाजिक माने जाते हैं।[9] चूड़ी पहनना अथवा हल्दी पानी भी एक तरह का विवाह संस्कार है जो बैगा आदिवासियों में एक से अधिक बार की जा सकती है । यह रजिस्टर्ड शादी जैसा हैं ,जो दो दलों की सहमति से होता हैं। तलाक की अनुमति हैं। बहुविवाह भी सीमित रूप में प्रचलित हैं।[10]

बैगा आदिवासियों में अंतर्विवाह नहीं होता है। ये कई अंर्तजातियों में बंटे रहते हैं। प्रत्येक जाति का अलग क्षेत्र होता है, और इन जातियों में श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए प्रतिद्वंद्विता रहती हैं। इन विभिन्न जातियों में बिंझवार, मंड्या,भरनोथिया,मुरिया बैगा ,नरोतिया,भरोटिया,नाहर रेभेना, गोंडवानिया, भूमिया ,कुरकाबैगा ,सबत बैगा और दूधभैना शामिल हैं । ये जातियां भी कई उपजातियों में विभाजित हैं (बहिर्जातीय विवाह के आधार पर)। ऐसा माना जाता है कि मूलतः प्रत्येक बैगा आदिवासी एक विशेष जंगल या चोटी से जुड़े थे और व्यभिचार (निकट सम्बन्धियों) को रोकने के लिए दूसरे जंगल या चोटी के बैगाओं से दूरी रखी। हालाँकि ये निषेध नहीं था। वर्गीय एल्विन के अनुसार ,ये बैगा नातेदारी प्रणाली दूसरे विषयों पर विशेष वर्गीकृत होती है। इनमें पितृवंशावली होती हैं। [11]

धार्मिक विश्वास, धार्मिक चिकित्सा, इलाज /बीमारियाँः–

अमरकंटक और उसके आस पास के बैगा ,अधिकांशतः पुरुष देवताओं कि पूजा करते हैं यद्यपि बैगा धार्मिक प्रवृति के होते है ,जिसमें देवी व देवता दोनों शामिल होते है ,बैगा की मान्यता है कि परमशक्ति दो वर्गो में बंटी है एक जिसे ये 'देव 'कहते है और दूसरी 'आत्मा 'जिसे ये 'भूत' मानते हैं ।[12] देवता उदार माने जाते है और आत्मा (भूत) देवता के प्रतिकूल माने गये।बैगा हिन्दू देवी देवताओं को ही मानते हैं ,इनके प्रमुख देवता जो उदार व हानिरहित है बारा देव या बुद्ध देव , ठाकुर देव (गांव के मुखिया), धरती माता (माँ पृथ्वी), भीमसेन (बारिश देवता), गानस्म देव (जंगली जानवरों

के हमलों से रक्षा करने वाले देव)।[13] बैगा कई महत्वपूर्ण घरेलू देवताओं –अजी–दादी (पूर्वजों), जो भट्टी के पीछे रहते हैं ,को मानते हैं। 'जादू 'भी बैगाओं में धर्म का ही स्वरूप है ,जो कि जानवरों व मौसमों को नियंत्रित करने , प्रजनन को सुनिश्चित करने के साथ ही व्यक्तिगत सुरक्षा की गारंटी देता हैं ।[14] बैगा वनवासी है, जो अपने पूर्वजों से प्राप्त रीति–रिवाजों और परम्पराओं को बनाये रखते हैं। ऐसा माना जाता है कि ये आनुवांशिक रूप से इंडो –आस्ट्रेलियन ग्रुप से जुड़े हैं। वास्तव में यह अतीत की एक भाषा थीं जो भारत –आस्ट्रेलियन भाषा कहलायी, लेकिन अब कई शताब्दियों से विलुप्त हो चुकी हैं।[15]

बैगा समाज में धार्मिक चिकित्सकों को उच्च स्थिति प्राप्त हैं ,जिन्हें ये 'देवर 'या 'गुनिया 'कहते हैं। 'देवर 'मुख्यतः कृषि और उससे जुड़े संस्कार ,गांव कि सीमा का आंकलन ,भूकंप रोकने इत्यादि कार्य के लिए जिम्मेदार होते हैं। गुनिया ,मुख्यतः जादुई ढंग से इलाज करते हैं। पांडा, बैगाओं के अन्य चिकित्सक साथी, जो अब प्रमुख स्थान रखते हैं। ये 'जनपांडा' यानि 'भेदक' कि संज्ञा पाते हैं, जिनकी पहुँच अलौकिक शक्ति तक हैं।[16]

बैगा आदिवासी समाज की ज्ञान –परम्परा बहुत समृद्ध रही है। यह तथ्य पिछले दिनों राष्ट्रिय जनजातीय विश्वविद्यालय ,अमरकंटक (म .प्र.) में मिले डॉ विजय चौरसिया ने भी पुष्टि की। उन्होंने आदिवासी समाज की परम्परागत ज्ञान पद्धति पर काम किया है।[17] मलेरिया बुखार आने पर ये पीपल की दातुन करते है। उसकी पहली पीक थूक कर शेष को पीने से बुखार ठीक कर लेते है। दन्त दर्द होने पर चितावर की डेढ़ पट्टी को दांतो में दबाने से दन्त दर्द में राहत मिलती है। इसी तरह मूत्र विकार व आँख की कोई भी बीमारी इन ओषधि का प्रयोग कर ठीक कर लेते है।

बैगा के लिए ,सबसे बड़ी बीमारी है ,जादू –टोना या एक से अधिक दुष्ट अलौकिक शक्ति की क्रियाविधि का होना। यद्यपि बैगाओं ने यौन रोगों के बारे में एक सिंद्धांत विकसित किये हैं। यौन संचालित रोगों का सबसे कारगर इलाज है, किसी कुंवारी के साथ यौन सम्बन्ध बनाना। बैगा देवताओं का कोई भी सदस्य बीमारी भेजने के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता हैं। जैसे माता भी बीमारी के लिए उत्तरदायी हो सकती हैं। यदि कोई, जानवर और मनुष्यों पर हमला करता हैं तो बीमारियों को दूर करने के लिए आवश्यक इन जादुई धार्मिक अनुष्ठानों के प्रदर्शन के साथ और रोगों के निदान के रूप में 'गुनिया 'को लिया जाता हैं।[18]

त्योंहार , गोदना परम्परा , मृतक संस्कार :

अमरकंटक के बैगा आदिवासी ,परम्पराओं में निहित, जीवन के प्रति आस्थावान है। ये अपने सुख –दुःख ,राग –विराग और भक्तिमूलक भावनाओं को विभिन्न कलारूपों में अभिव्यक्त करते है। इनकी प्रत्येक गतिविधियाँ स्वाभाविक जीवनचर्या का अंग होती है, जो संस्कारो से प्राप्त है। पर्व त्यौहार सब संस्कृति के संवाहक और पोषक है। बैगा के त्योहारों से उनकी परम्पराओं तथा सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का पता चलता है।

बैगाओं के अधिकांश त्योंहार 'कृषि 'से जुड़े हैं । बैगा भी हिन्दुओं की तरह होली ,दिवाली और दशहरा त्योंहार मनाते हैं। 'दशहरा 'अवसर के दौरान बैगा 'बिदा' विधान ,जो एक समारोह है जिसमें पुरुष ,किसी भी ऐसी आत्माओं को जो पिछले वर्षो से परेशान कर रही थीं ,उसे दूर करते हैं। हालाँकि ये हिन्दू संस्कार नहीं हैं ,फिर भी उनके विधान में हैं ।[19] बैगा कई त्योहारों को मनाते हैं। चार्ता या किचराही त्योंहार (एक बच्चे का भोज)जनवरी में मनाया जाता हैं। 'फाग 'त्योंहार (जिसमें महिलायें ,पुरुषों को पीटती हैं)मार्च में होता हैं। 'बिदरी' समारोह (जो कि फसलों की सुरक्षा और आशीर्वाद के रूप में) जून माह में मनाया जाता हैं। 'हरेली 'त्योंहार (अच्छी फसल सुनिश्चित करने के लिए) अगस्त में आयोजित होता हैं ,पोला त्योंहार (मोटे तौर पर हरेली के बराबर ही) अक्टूबर में आयोजित होता हैं। नवा भोग (दावत) फसल के लिए धन्यवाद स्वरूप ,बरसात के मौसम के अंत में मनाया जाता है।[20] बैगा अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए मशहूर है। बाहरी लोगो से मिलना जुलना इन्हे पसंद नहीं है। यहाँ तक की ये अपने जैसे अन्य आदिम समूहों से भी दूरी रखते है। बैगा स्त्रियाँ ललाट पर बिंदी नहीं लगाती है। वे नासिका में छिद्र नहीं करवाती है, पुरुष लम्बे केश रखते है। स्त्री और पुरुष घुटनो के ऊपर कपडें पहनते है। स्त्रियाँ सिर नहीं ढंकती है।

दशहरा ,कर्मा ,ददरिया ,फाग और बिलमा के अवसरों पर स्त्री –पुरुष दोनों नृत्य –गान के बड़े शौकीन होते है और समूह में नृत्य करते है। बैगाओं की जीवनशैली ही कुछ ऐसी है कि बैगा पुरुष साहसी होते हैं और अच्छे शिकारी भी।

बैगाओं की मुख्य विशेषता, महिलायें गोदने की शौकीन होती है। इनके लिए 'गोदना' उनकी जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है, ये मुख्यतः सतपुड़ा, शहडोल, अनूपपुर, मंडला, बालाघाट व म .प्र. की सीमा से सटे छत्तीसगढ़ के बिलासपुर , मुंगेली जिले के घने जंगलो में पाये जाते हैं । बैगा द्रविण प्रजाति के हैं और छोटा नागपुर की भुईया जनजाति की शाखा के माने जाते हैं। बैगा आदिवासियों की एक खास विशेषता है कि महिलायें अपने पूरे शरीर के विभिन्न अंगों में टैटू ,गोदना गुदवाने के लिए प्रसिद्द हैं ।'गोदना 'का कार्य करने वाले कलाकार 'ओझा बडनी व देवर 'नाम से जाने जाते हैं।[21] इन आदिवासियों में 'गोदना 'मुख्यतः सर्दियों में शुरू होता है और गर्मियों तक चलता हैं। पी. आर. शुक्ल का कथन है –गोदने शरीर के अलंकरण के साथ –साथ प्रजनन और मंगल के लिए तथा बुरी आत्माओं की कोप दृष्टि से सुरक्षार्थ गोदे जाते है। [22] गोदना के पीछे छिपा तथ्य यह है की आभूषण या सौन्दर्य की भावना से गुदना गुदवाया जाता है क्योंकि बैगा आदिवासियों में यह मान्यता है की मृत्यु पश्चात् भी शरीर के साथ गोदना रूपी आभूषण ही साथ जाता है ,जिसे कोई छीन नहीं सकता और न ही मांग सकता है। यह आदिवासियों की सम्पन्नता की निशानी है।

बैगा आदिवासियों का विश्वास है कि मृत्यु बाद तीन आलौकिक शक्तियों के टूटने पर मनुष्य विश्वास करता है। पहला 'जीव' भगवान से वापस आता है , जो मैकल पहाड़ी के पूर्वी छोर, पृथ्वी पर रहता है। दूसरा 'छाया' है जो मृत व्यक्ति के घर से लायी जाती हैं जो कि 'पारिवारिक अंगीठी' के पीछे रहती हैं । तीसरा 'भूत 'एक व्यक्ति का बुरा हिस्सा माना जाता हैं ,चूँकि यह मानवता के विरुद्ध है , इसलिए इसे दफनाये जाने वाली जगह में छोड़ते हैं। इनका विश्वास है कि जीवन बाद भी मृत, ऐसे ही समान सामाजिक –आर्थिक स्थिति में रहता हैं ,जैसा वे पृथ्वी पर जीवित रहते हुये, आनंद से रहें। [23] साथ ही ,जब तक वे जीवित रहते हैं और अपने जीवन काल में जो देते हैं वे वही भोजन खाते है और अपने जीवनकाल के दौरान जहाँ रहते हैं समान रूप से उसी घर में वे भी रहते है । एक बार जब यह आपूर्ति समाप्त होने लगती है, वे दुबारा अवतार लेते है । चुड़ैल और दुष्ट व्यक्ति ऐसे अच्छे भाग्य से आनंदित नहीं होते है।[24]

निष्कर्ष :

अमरकंटक के ही नहीं सम्पूर्ण म .प्र. के बैगा आदिवासियों की सांस्कृतिक ,पारम्परिक विशेषताएँ, आधुनिक वातावरण से भिन्न है । वर्तमान की अंधा– धुंध दौड़ से बैगा कोसो दूर रहकर अमरकंटक के प्राकृतिक एवं स्वाभाविक परिवेश में ही जीवन यापन करते है। निष्ठा ,ईमानदारी ,परिश्रम और स्वंच्छदता इन्हें धरोहर में मिली है । और इनकी सुरक्षा के लिए कृत संकल्प भी है। इनके धर्म ,विश्वास और जीवन चर्या पर परिवर्तन का प्रभाव अभी उतना नहीं हो पाया। उनका जीवन दर्शन अभी भी सदियों पीछे है, किन्तु उन्हें असभ्य या असंस्कृत कहना समीचीन नहीं होगा। वे ऐसे संस्कार धानी है, जो अपने अमूल्य धरोहर को निरंतर बनाये रखने के लिए सदैव उद्धत रहे है।

संदर्भः

1.अटल योगेश, सिसोदिया,यतीन्द्र सिंह ,आदिवासी भारत ,रावत पब्लिकेशन ,जयपुर ,1965,पृ. 9
2. धुर्वे ,कन्हैया लाल ,बैगा जनजाति का इतिहास ,विंध्य भारती (शोध पत्रिका),अ.प्र.सिं.वि .वि .रीवा ,मई 2015
3. वही
4. एल्विन ,वी.द बैगा ,जॉन मुर्रे ,लंदन ,1939 ,पृ 78 –79
5. मिश्रा ,पी.के .पैटर्न ऑफ इंटर–ट्राइबल रिलेशन्स ,इन ट्राइबल हेरिटेज ऑफ इंडिया ,विकास पब्लिशिंग हाउस ,नई दिल्ली ,1977 ,पेज 85
6. वही ,पृ 86 –115
7. रॉय ,सरत चंद्रा,द हिल भुईयास ऑफ उड़ीसा विथ कंपरेटिव नोट्स ओन द प्लेन्स भुईयास मैन इन इंडिया ऑफिस ,रांची ,1935
8. एडु जंक्शन ,शोध पत्रिका विशेषांक ,भिलाई ,2013 ,वॉल्यूम –5 ,पृ 56 ,सिंह, विभा,छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातियों का विकास
9. चट्टोपाध्याय ,कमला देवी ,ट्रिबलिज्म इन इंडिया ,विकास पब्लिशिंग हाउस ,नई दिल्ली ,1978 ,पृ 98
10. दास,तारकचंद्रा,द भूमिजस ऑफ सेराइकेला ,यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता ,1931 ,पृ 70
11.शर्मा ,राजीव लोचन ,जनजातीय जीवन और संस्कृति (शोध प्रबंध),1963 ,पृ 315
12. विंध्य भारती (शोध पत्रिका),अ.प्र.सिंह ,वि .वि .रीवा ,मई 2015 ,पृ 72
13. दुबे ,एस.सी .मानव और संस्कृति ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,1970 ,पृ 35
14. तिवारी ,एस. के.म.प्र.की जनजातियाँ,म.प्र .हिंदी अकादमी ,भोपाल ,1982 ,पृ 68
15. कपाड़िया ,के .एम.भारतवर्ष में विवाह तथा परिवार ,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी ,जयपुर ,1962 ,पृ 16
16. निर्गुणे ,बसंत ,बैगा ,आदिम जाति अनुसन्धान विकास संस्थान,भोपाल ,1986 ,पृ 18
17. मीणा ,हरी राम ,परम्परा का ज्ञान पोसते वनवासी ,जनसत्ता ,न्यूज पेपर ,25 जून 2019
18. दुबे ,श्यामा चरण ,मानव और संस्कृति ,पूर्वोक्त ,1982 ,पृ 25
19. शर्मा ,ब्रह्मदेव ,आदिवासी विकास एक सैद्धांतिक विवेचना ,म.प्र.हिंदी ग्रन्थ अकादमी ,भोपाल ,1986 ,पृ 34
20. हुस्ने, नदीम ,जनजातीय भारत ,जवाहर पब्लिशर्स एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स ,दिल्ली ,1986 ,पृ 125
21. दुबे ,रश्मि ,बैगा जनजाति में धर्म का परिवर्तित स्वरूप ,वन्यजाति पत्रिका ,दिल्ली ,जुलाई 1991 ,पृ 91
22.तिवारी ,शिवकुमार ,म .पर .हिंदी ग्रन्थ अकादमी ,भोपाल ,1999,पृ .–273
23. दुबे ,रश्मि ,वही ,पृ 92
24. वही,पृ 96